

## RAJYA SABHA

*Monday, the 1th May, 1973/the 17th  
luisakha, 1895 (Saka)*

The House met at eleven of the clock,

MR. CHAIRMAN in the Chair.

### ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

121. *The questioner (Shri Venigalla Satyanarayana) was absent. For answer, vide cols. 33-34 infra]*

122. *[The questioners (Shri Himmat Singh, Shri Harsh Deo Malaviya and Shri Sardar Amjad Ali) were absent. For answer, vide cols. 34-35 infra].*

### TICKETLESS TRAVEL BY C. P. I. WORKERS FROM BIHAR TO DELHI

123. SHRI M. K. MOHTA:  
SHRI DEBANANDA AMAT:  
SHRI K. P. SINGH DEO:  
SHRI SUNDAR MANI PATEL:  
SHRI K. C. PANDA:  
SHRI LOKANATH MISRA: SHRI  
CHANDRAMOULI JAGARLAMUDI:

Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that over 6000 CPI workers from Bihar were allowed to travel to New Delhi by various trains without tickets for participation in C.P.I. demonstration held in New Delhi on the 27th March, 1973; and

(b) if so, under what rules they were allowed to travel upto New Delhi without tickets?

-THE MINISTER OF  
RAILWAYS

SHRI L. N. MISHRA: (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

SHRI LOKANATH MISRA: May I know whether it is not a fact that some of the

The question was actually asked on the floor of the House by Shri Sundar Mani Patel.

16 RSS/73—I.

trains got delinked at Lucknow Station because of overcrowding by the ticketless travellers and the District Magistrate, Lucknow, and the Commissioner probably they complained that it would be impossible to allow the trains to go with so much of overcrowding because bona fide passengers were inconvenienced? And may I know whether because of these ticketless travellers who were coming to attend the CPI rally in Delhi there was a loss of about Rs. 15 to Rs. 20 lakhs incurred to

j the public exchequer, because of ticketless travellers from all parts of India, not only from Bihar, but there were ticketless

j travellers from the south, from the west, from the east, from the north, from everywhere?

j SHRI L. N. MISHRA: You will recall I think I made a statement in this regard in this House and a number of supplementary of this very nature were put and I had replied to all those supplementaries. If the hon. Member takes the trouble to go through the proceedings, he will find all the answers. It is a fact that there was overcrowding by ticketless travellers, as the hon. Members says, in Lucknow, and efforts were made to clear them. I do not want to go into the details, they have been stated therein. Normal detections were also made. I have given the figures as to how many were detected, what money was realised and how many were convicted.

So far as loss to public exchequer is concerned, Sir, I do not think it is to that extent; we lose Rs. 20 to Rs. 25 crores per annum in ticketless travel there, and in this case there is nothing abnormal.

SHRI LOKANATH MISRA- What are the figures?

SHRI NAWAL KISHORE: Is he prepared to give the figure?

SHRI LOKANATH MISRA : What was the amount realised?

MR. CHAIRMAN: You may give the figures.

SHRI L. N. MISHRA: Yes, Sir

	At stations between Patna- Mughalsarai (Eastern)	At stations between Mughalsarai Delhi (Northern)	At stations between Lucknow- Delhi (Northern)	Lucknow- M.G. (North eastern)
1. No. detected	70	364	295	159
2. Amount of fare and penalty re- covered.	Rs. 710.57	Rs. 3655.15	Rs. 2915.75	Rs. 1191.5
3. No. prosecuted	19	147	47	153
4. Amount of fine imposed.	..	Rs. 5925.00	Rs. 215.05	Rs. 60
5. Fine realised.	..	Rs. 1410	Rs. 460.00	..
6. Number sent to jail.	..	87	33	54

SHRI CHANDRAMOULI JAGARLAMUDI: Sir, the *Times of India* dated the 26th March, 1973, gave a report that the District Magistrate of Lucknow told UNI that some of the CPI workers were persuaded to purchase tickets and he admitted that some of the passengers were also allowed to return their tickets. That means that only some of the people travelled with tickets and some of the *bona fide* passengers were pulled out of the train and they were given back their fare to make way for these ticketless travellers. If that is so, what action has the Government taken in this connection?

SHRI L. N. MISHRA: Sir, action was taken a long time ago. Both the things are correct. The trains were overcrowded and it was difficult for the genuine passengers to travel. Some of them did travel, but many of them got refund. I have stated earlier the amount refunded and the class of passengers. So far as purchase of tickets by the people is concerned, many of them purchased tickets and I have stated earlier whatever detection has been made. And I might say that in the back journey, only normal ticketless travelling was there, but nothing on a mass scale.

श्री बनारसी दास : क्या मंत्री जी कृपा कर के बतावायेंगे कि सी० पी० आई० के वर्कर्स को वापस भेजने के लिए वहाँ से विशेष तौर से कितनी स्पेशल्स भेजी गई और जो स्पेशल्स

भेजी गई क्या उनके लिए पैमेंट जने माध्यामनया अन्य दत्ता में लिया जाता है उसी तरह से सी० पी० आई० में भी पैमेंट लिया गया।

श्री एल० एन० मिश्र : जी हाँ, एक स्पेशल ट्रेन गई और उसका गेडवाम पैसा लिया गया। जिस तरह से किसी अन्य दल या अन्य पार्टी में गेडवाम लिया जा सकता है उस तरह से सी० पी० आई० दानों में भी लिया गया। वे लाये भी थे स्पेशल में और गये भी स्पेशल में। जाने के लिए वे चाहते थे तीन स्पेशल, लेकिन ले गये एक और उसका पैसा उन्होंने उसी तरह से दिया जिस तरह से कोई अन्य व्यक्ति या संस्था देती है।

श्री विलोकी सिंह : मान्यवर मैं यह प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि क्या माननीय मंत्री यह बतलायेंगे कि कृपा करेंगे कि लखनऊ में 24 अप्रैल और 83 अप्रैल से दो गाड़ियाँ 24 तारीख की शाम को चलने वाली थी जिस में इन्फिक्मिन्स में मैंने भी अपनी रिजर्वेशन करा रखा था, उन गाड़ियों का चलना क्यों मसूख किया गया। लोगों में कहा गया कि अपने टिकट वापस कर दो और टिकट वापस भी हो गये। फिर माडे बार पांच घंटे बाद उन गाड़ियों को लखनऊ में चाल कर दिया गया दिल्ली के लिए ऐसे लोगों को बिठा कर जिन में से ज्यादा के पास टिकट नहीं थे। क्या मंत्री जी बतायेंगे कि उन गाड़ियों को क्यों

संमुख किया गया और फिर साढ़े चार घंटे बाद वहाँ उनको चालू किया गया। यह भी बनवाने की कृपा करें कि इस घटना में क्या डिविजनल मुप्रिटेण्डेंट, एन० आर० लखनऊ, ने दिल्ली में रेलवे के उच्च अधिकारियों से बात की और उसके बाद ये गाड़ियाँ फिर से वहाँ से चली। यदि हाँ, तो इसकी क्या वजह है।

**श्री एल० एन० मिश्र :** यह बात सही है और मुझे खेद भी है कि बहुत से जो हमारे यानी वे जिन में माननीय सदस्य भी थे उनको कष्ट हुआ और उनके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ, लेकिन लाचारी थी क्योंकि गाड़ी भर गई थी उन लोगों से जो रेली में भाग लेने के लिए आ रहे थे। यह बात भी सही है कि हम उस गाड़ी को बाहर ले गये जहाँ पर उसकी धुलाई होती है इस खयाल से कि वहाँ पर लोग उतर जायेंगे और जेन्सुइन पैमेंजर आ सकेंगे, लेकिन वह संभव नहीं हो सका। फिर परिस्थिति कुछ ऐसी खराब नजर आई कि वहाँ डिस्ट्रिक्ट कमिशनर और आई० जी० पुलिस बरीकर गये और उन लोगों की राय हुई कि गाड़ियों को वहाँ से चला दिया जाय अन्यथा लखनऊ जैसे शहर में ऐसी घटना घट सकती है जो कानून के हिमाब से खराब हो और फिर वह कबजे में न आये। इस लिए उन लोगों ने राय दी हमारे अफसरों को कि इस गाड़ी को आप जल्दी से जल्दी लखनऊ से चला दीजिये ताकि परिस्थिति बिगड़ती जा रही थी। यह बात सही है कि वहाँ के डिविजनल मुप्रिटेण्डेंट ने वहाँ के हमारे अफसरों से बातचीत की और हम से भी हमारे अफसरों ने बात की। हमने वहाँ के मुख्य मंत्री से बात करने की कोशिश की, लेकिन नहीं हो सकी। हमने होम मिनिस्टर से भी बात करने की कोशिश की, लेकिन उनसे भी बात नहीं हो सकी। फिर हमने अपने मेम्बर, ट्रांसपोर्ट से कहा कि वे अपने अफसरों से बात कर के जो भी उचित हो वह करें। उन्होंने इस खयाल से कि कोई दुर्घटना या दुखद चीज न हो गाड़ी को वहाँ से चला दिया। जो माननीय सदस्य को तकलीफ हुई है उसके लिए मैंने पहले भी कहा है और आज भी कहना हूँ कि हम क्षमाप्रार्थी हैं।

**श्री मालवीय वर्मा :** माननीय मंत्री जी ने अभी अपने उत्तर में कहा है कि हम ने मेम्बर ट्रांसपोर्ट से यह कहा कि जैसी परिस्थिति हो उस के हिमाब से अपने विवेक का प्रयोग वह करें तो इस में यह मिथ्य होता है कि जो चार्ज लगाया गया है कि यहाँ से सिगनल दिया गया कि जो लोग विदाउट ट्रेवल कर रहे हैं वहाँ पर छोड़ गाड़ी में बैठ गये हैं और जिन्होंने बॉनाफाइड पैमेंजरों की सीटों को ले लिया है और उन को इस तरह का अदेश है क्योंकि डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने कहा है कि अगर इस तरह का परिस्थिति चलने दी गयी तो वहाँ झगड़ा हो जाने का अदेश है और तो आप के मेम्बर ट्रांसपोर्ट के सिगनल पर, उन के इशारे पर वहाँ से वे विद आउट टिकट लोग वहाँ पर ले आये गये...

**श्री एल० एन० मिश्र :** मेम्बर ट्रांसपोर्ट के इशारे पर कुछ नहीं किया गया। आप गलत आरोप न लगाइये। उस दिन भी गलत आरोप लगाये गये थे और मैंने उस दिन भी उन का खंडन किया था। किसी के इशारे पर यह बात नहीं हुई, लेकिन परिस्थिति को बचाने के लिए अफसर आन दि स्याट जो होता है उस को कुछ जिम्मेदारी होती है। उस का फैसला वहाँ यह हुआ कि यहाँ से गाड़ी चला दी जाय नहीं तो हंगामा होने की आशंका है। हम ने मुख्य मंत्री जी से और वहाँ के होम मिनिस्टर से बात करनी चाही थी वह उस दिन उपलब्ध नहीं हुए इसलिए हम ने मेम्बर ट्रांसपोर्ट से उन को बात करने को कहा और उन्होंने उनसे बात की और उनकी इस बात में वहाँ के टाप अफिशियल थे, वहाँ के होम सेक्रेटरी थे, आई० जी० पुलिस थे और उन सब की राय पर यह गाड़ी चलायी गयी।

**श्री सोताराम सिंह :** मैं माननीय मंत्री जी से बानना चाहता कि उन को वहाँ से बिना टिकट लाने के लिए अगर आप का कोई लिखित अदेश नहीं था तो क्या कोई अलिखित अदेश था? अगर कोई अलिखित अदेश भी नहीं था तो जिन अधिकारियों को डिप्टी में उन लोगों ने

बिना टिकट सफर किया उन को दंड देने की मंत्री जी ने कोई व्यवस्था की है? अगर की है, तो क्या ?

**श्री एल० एन० मिश्र :** सभापति महोदय, लिखित और अलिखित में की कोई बात नहीं है, लेकिन उन को यहाँ से किसी तरह का इजाजत नहीं दिया गया। उस दिन आप को याद होगा वह बहुत जोर से चीन रहे थे। उन्होंने हमारा नाम लिया था, प्रधान मंत्री जी का नाम लिया था और कहा था कि हम लोगों ने कम्युनिस्टों की मदद की है। किसी तरह की राजनीतिक बात में मैं नहीं जानता चाहता। इस प्रश्न का संबंध है टिकट-लेस ट्रेवल से, और हम ने उस का उत्तर दिया कि जो लोग आये थे उन से हम ने पूरा भाड़ा लिया, जुमाना लिया और यहाँ से जाने के समय वह स्पेशल ट्रेन से गये। उन अधिकारियों को, जिन के कारण यह चीज हुई है उन को सजा देने की बात संभव नहीं थी इसलिए कि वह एक माम स्कोल पर बात हुई है और इस बात के लिए हमारे लिए यह संभव नहीं था कि किसी एक टी० टी० आई० को या किसी इंडिविजुअल अफसर को पकड़ने और उस को दंड देने। इस को हम ने देखने की कोशिश की लेकिन इस को रोकना बड़ा मुश्किल था। वहाँ पर स्थानीय पुलिस अफसर मौजूद थे और उन का कहना था कि इस गाड़ी को यहाँ से चलाइये नहीं तो हंगामा होने का खतरा है।

**डा० जैड० ए० अहमद :** मैं मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूँ कि क्या यह भी हकीकत है कि जहाँ मने होते हैं, जहाँ यात्राये होती हैं, जैसे कुभ मेला होता है और मैं इलाहाबाद का रहने वाला हूँ, जानता हूँ, वैसे ही अयोध्या का मेला होता है, मैं लाखों आदमी बगैर टिकट ट्रेवल करते हैं। मैं पूछता हूँ कि क्या उस समय यह नहीं होता है कि पांजीशन को सम्हालने के लिए ज्यादातर लोगों को निकालने दिया

जाता है और जितने हाथ में धान है उन से टिकट ले लिया जाता है। आज में पूछना चाहता हूँ कि क्या यह कोई विशेष परिस्थिति पैदा हो गयी थी कि पार्लियामेंट के अंदर यह सबाल आया ? आज अयोध्या जी के मने में या कुभ के मने में इस से ज्यादा भीड़ नहीं होती है और इस से ज्यादा टिकट-लेस ट्रेवल नहीं होती है ? क्या यह हकीकत नहीं है और क्या रेलवे के कर्मचारी इस को समझदारी से देखकर नहीं करते जिस तरह से कि उन्होंने इस बार यहाँ किया है।

**श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** कुभ और दूसरे मेलों में लाखों लाख रुपये की आमदनी होती है और सरकार उन की व्यवस्था करती है। सरकार को इस से कितनी आय हुई यह भी बता दीजिए।

**श्री एल० एन० मिश्र :** डा० अहमद से मैं कहूँगा कि बहुत नहीं प्रश्न उन्होंने किया है और हम वास्तविकता को इन्कार करेंगे अगर यह कहे कि इस तरह की बातें अन्य दिनों में नहीं होती हैं। कुभ का मेला होता है या दूसरी तरह की बातें आये दिन हुआ करती हैं और उस से धाय भी होती है नहीं तो 20, 25 करोड़ रुपया साल का जो हम नुकसान उठा रहे हैं टिकट-लेस ट्रेवल के कारण यह नुकसान भी रेलवे के कारण ही नहीं खल रहा है। वैसे उत्तर बिहार में ही बिना टिकट चलने वाले की बहुत बड़ी तादाद है। मैं उसके फियर्स जानता हूँ और हम उस का इंतजाम कर रहे हैं और वहाँ स्पेशल स्क्वैड भेज रहे हैं ताकि उस को रोक जा सके। तो यह टिकट-लेस ट्रेवल रेलवे के लिए कोई नई बात नहीं है, लेकिन मैं क्या कहूँ। डा० अहमद से यही कहूँगा कि यह सी० पी० आई० की रैली थी और उन के मित्र बहुत हैं इस देश में इसी लिये वे इस तरह की बात को उठाया करते हैं।